Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 17, Issue No. 1, April-2020, ISSN 2230-7540

उद्यमिता के लिए ग्रामीण महिलाओं में कौशल विकास प्रशिक्षण का प्रभाव विकास

कुमारी भारती[1]*, डॉ चंद्रकान्त चावला[2]

[1] पीएच. डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

[2] सह - प्राध्यापक (समाजशास्त्र), कला विभाग, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

सार - *महिला उद्यमी की अवधारणा आज एक वैश्विक परिघटना बनती जा रही है। ग्रामीण महिलाएं उद्यमी या तो एक व्यक्ति या एक समूह हो सकता है और इसे विभिन्न कोणों से देखा जा सकता है जैसे आर्थिक, सामाजिक और संस्कृति। "महिलाओं पर अनुसंधान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र " का अनुमान है कि 36% तीसरी दुनिया के छोटे उद्यमियों में प्रतिशत महिलाएं हैं। उद्यमिता महिलाओं के लिए उपयुक्त है और यह काम करना संभव है , जब उसके पास खाली समय हो। एक स्व-नियोजित महिला बेहतर स्थिति प्राप्त कर रही है और यह उसे अपने पारिवारिक मामलों में निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य उद्यमिता विकास और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए ग्रामीण महिलाओं के बीच प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए कौशल विकास के लिए एक हस्तक्षेप पैकेज विकसित करना। एक 30 उत्तरदाताओं का उद्देश्यपूर्ण यादृच्छिक नमूना हरयाणा के करनाल ज़िले के निलोखेरी तहसील के अमरघर गाँव से चयनित किया गया| उनके अपने गांव में प्रशिक्षण दिया गया। स्व-विकसित कौशल मूल्यांकन परीक्षण और रेटिंग पैमाने का उपयोग किया गया था।जांच के प्रमुख निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश उत्तरदाता 20-30 की आयु वर्ग , उत्तरदाताओं की आय के आधे से थोड़ा अधिक रुपये 5,000-10,000/ माह के बीच थे और मध्यम सामाजिक आर्थिक स्थिति के थे। उत्तरदाताओं द्वारा चयनित पांच मूल्य वर्धित जूट लेख प्रशिक्षण के लिए जूट की 20 वस्तुओं की सूची में बेल्ट, फोन मैट, बुक होल्डर, फोटो फ्रेम और जूट पेंटिंग शामिल हैं।आठ दिवसीय कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर प्रदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया।*

कौशल मूल्यांकन परीक्षण द्वारा प्राप्त परिणाम से पता चला कि सभी महिलाएं उत्कृष्ट कौशल विकास की श्रेणी में आती हैं और उद्यमिता विकास के लिए प्रयोज्यता थी। यह भी पाया गया कि ग्रामीण महिलाएं जूट को उद्यम के रूप में अपनाएं।

विशेष शब्द - *कौशल विकास, प्रशिक्षण, उद्यमिता*

----------X----------

परिचय

महिलाओं के बीच उद्यमिता विकास मानसिक संतुष्टि प्रदान करता है और महिलाओं को नियमित काम से मोड़ प्रदान करता है | यह शिक्षित महिलाओं को मनोवैज्ञानिक संतुष्टि या राहत देता है , उपलब्धि की भावना प्रदान करता हैं और समाज में पहचान को बढ़ाती हैं। उद्यमिता एक अभिनव और गतिशील प्रक्रिया है , जिससे एक नया उद्यम बनाया जाता है। उद्यमी परिवर्तन का उत्प्रेरक एजेंट जो दूसरों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करता है। जब एक उद्यम महिलाओं द्वारा स्थापित और नियंत्रित किया जाता है, यह न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है , बल्कि कई वांछनीय परिणाम हैं। ग्रामीण महिलाओं में उद्यमिता के लिए सहज स्वभाव होता है। वे प्राकृतिक शुद्ध कार्यकर्ता हैं। महिलाएं भी उतनी ही सक्षम जितने उनके पुरुष । महिला सशक्तिकरण उद्यमी सामाजिक आर्थिक का वाहन बन सकती हैं | हालांकि भारत में महिलाओं ने व्यवसाय में अपेक्षाकृत देर से प्रवेश किया है , मुख्य रूप से रूढ़िवादी और

पारंपरिक सामाजिक -सांस्कृतिक वातावरण के कारण परिदृश्य और उद्यमिता को उनकी रसोई की गतिविधियों के विस्तार के रूप में देखा जाता है , मुख्य रूप से 3P अर्थात अचार, पाउडर और पापड़। भारत में महिलाएं पुल और पुश दोनों कारकों के लिए व्यवसाय में प्रवेश करती हैं , इसका तात्पर्य उन कारकों से है जो महिलाओं को स्वतंत्र रूप से कुछ करने की इच्छा के साथ व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। पुश फैक्टर उन कारकों को संदर्भित करता है जो महिलाओं को अपनी आर्थिक कठिनाइयों और जिम्मेदारियों से निपटने के लिए अपना खुद का व्यवसाय लेने के लिए मजबूर करते हैं।

ग्रामीण महिलाओं के लिए कौशल विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्रामीण महिलाओं को स्वयं अपनी आत्मनिर्भरता बढ़ाने के लिए संगठित करने में सक्षम हैं , चुनाव करने के अपने स्वतंत्र अधिकार की सहायता करने के लिए और संसाधन को नियंत्रित करने के लिए जो अपने स्वयं के अधीनस्थ को चुनौती देने और समाप्त करने में सहायता करेगा और यह व्यापक रूप से माना जाता है कि महिलाएं काम करती हैं और आर्थिक क्षमताएं उन्हें सुविधा प्रदान कर सकती हैं | संसाधनों पर अपना नियंत्रण प्राप्त करें और स्वयं को आत्मविश्वास और आत्म सम्मान विकसित करें। ग्रामीण आबादी रोजगार के अवसरों की कमी के कारण शहरी क्षेत्र में प्रवास करती है । ग्रामीण महिलाएं स्कूल ड्रॉपर हैं जिनके पास उत्पादक कौशल की कमी है। गरीबी और बेरोजगारी की समस्या का समाधान व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण होगा। इस कौशल प्रशिक्षण की मदद से महिलाएं सोशल नेटवर्क सिस्टम में प्रवेश कर सकेंगी और, जो उन्हें अधिक सकारात्मक निर्णय लेने की शक्ति हासिल करने में मदद करेगा। प्रभावी महिलाओं को जागरूकता से अपना जीवन उठा सकते , सामाजिक मानक उन्हें गरीबी कम करने और सशक्तिकरण की भावना विकसित करने के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक स्तर पर भी सक्षम बनाता है |

उद्देश्य

1) कौशल विकास को कार्यान्वित और विकसित करने के लिए पैकेज जूट उत्पादों पर आधारित सूक्ष्म उद्यम स्थापित करना |
2) प्रशिक्षण के प्रभाव का आकलन करने के संदर्भ में दिए गए कौशल का विकास और प्रशिक्षण की प्रभावशीलता।

अनुसंधान कार्यप्रणाली

वर्तमान अध्ययन कौशल उद्यमिता के लिए ग्रामीण महिलाओं में विकास के लिए किया गया था। अध्ययन करनाल जिले के नगरपालिका सीमा में आयोजित किया गया था | अनुसंधान उद्देश्य के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा 30 ग्रामीण महिलाओं और विशेषज्ञों के 10 पैनल का एक नमूना आकार यादृच्छिक नमूनाकरण विधि द्वारा चयनित किया गया। उद्देश्यों के अनुसार, एक हस्तक्षेप "मूल्य वर्धित जूट उत्पाद" शीर्षक वाला पैकेज (पुस्तिका) शोधकर्ता द्वारा विकसित किया गया है। मोबाइल कवर, पेन स्टैंड, फल टोकरी, वॉल हैंगिंग, डोर मैट, फोटो फ्रेम, पॉट होल्डर, चाय

कोस्टर, बंदरवर, जूट पेंटिंग, फ्लावर पॉट, सजावटी पर्दा, चाबी की चेन, नैपकिन धारक, पुस्तक धारक, बेल्ट, कंघी होल्डर, छिका, फोन मैट और हैंड बैग शोधकर्ता द्वारा बनाए गए थे और विधि का दस्तावेजीकरण क्रमशः किया गया था। इसका मूल्यांकन दस विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा किया गया था| इसका मूल्यांकन कपड़ा और परिधान डिजाइनिंग और गृह विज्ञान का क्षेत्र विस्तार और संचार प्रबंधन के दस विशेषज्ञों के एक पैनल द्वारा किया गया था। विकसित बुकलेट/हस्तक्षेप पैकेज को विशेषज्ञों के पैनल द्वारा बहुत अच्छा माना गया | अमरघर गांव में आठ दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण में प्रशिक्षण से पहले भाग लेने की इच्छा पूछी गई थी । स्व-विकसित रेटिंग पैमाना और कौशल डेटा संग्रह के लिए मूल्यांकन परीक्षण का उपयोग किया गया था। डेटा आवृत्ति प्रतिशत और औसत प्रतिशत स्कोर का उपयोग करके विश्लेषण किया गया |

परिणाम और चर्चा

1. उत्तरदाताओं की सामान्य प्रोफ़ाइल

आयु: तालिका 1 में डेटा से पता चलता है कि 43 प्रतिशत उत्तरदाता 26-30 वर्ष के आयु वर्ग के थे

जबकि 37 प्रतिशत उत्तरदाता 20-25 वर्ष के आयु वर्ग के हैं और 20 प्रतिशत 31-35 वर्ष के आयु वर्ग में थे।

शिक्षा : शिक्षा से संबंधित आंकड़ों से पता चला है कि एक तिहाई से अधिक उत्तरदाताओं (40%) 8वीं कक्षा तक शिक्षित थे जहां उत्तरदाताओं का एक चौथाई अधिक है यानी 30 फीसदी 12वीं कक्षा तक पढ़े लिखे थे। लगभग 17 प्रतिशत उत्तरदाता प्राथमिक कक्षा तक शिक्षित थे| इसके बाद 13 प्रतिशत स्नातक थे। परिवार का प्रकार: आधे से अधिक उत्तरदाताओं (53%) ने संयुक्त परिवार जहां 47 प्रतिशत के पास एकल परिवार था।

मासिक आय : तालिका से पता चलता है कि 53.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं की 5,000-10,000 रुपये प्रति माह की सीमा में आय थी जबकि 26.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं की आय 11,000-15,000 रुपये प्रति माह के बीच है जबकि उत्तरदाताओं का 20 प्रतिशत 16,000-20,000 रुपये प्रति महीना के आय समूह से संबंधित हैं |

मास मीडिया एक्सपोजर : आधे से अधिक प्रतिवादी (57%) के पास मनोरंजन के माध्यम के रूप में टीवी था जबकि 43 प्रतिशत के पास रेडियो है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति : उत्तरदाताओं की सामाजिक - आर्थिक स्थिति आय के अनुसार बराबर वर्गीकृत थी | उत्तरदाताओं की संख्या (50%) मध्यम और निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति क्रमशः थी |

पटसन उत्पादों को सीखने में रुचि: तालिका दर्शाती है कि सभी ग्रामीण महिला उत्तरदाताओं (100%) अत्यधिक प्रेरित थीं और मूल्यवर्धित पटसन उत्पाद बनाने का तरीका जानने में रुचि रखते हैं।

महिलाओं द्वारा बताए गए कारण कि उन्होंने मूल्यवर्धन के बारे में कभी नहीं सुना जो उनके लिए एक नया शब्द था इसलिए वे मूल्य वर्धित जूट उत्पाद बनाने के लिए प्रक्रिया सीखने के बारे में अधिक उत्सुक और उत्साही थे |

प्रशिक्षण का विवरण : उत्तरदाताओं को हस्तक्षेप पैकेज देने के लिए तीन घंटे की अवधि का आठ दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया था। यह प्रशिक्षण करनाल जिले की "निलोखेरी तहसील" में अमरघर गांव में आयोजित किया गया था | प्रतिवादी को 20 जूट उत्पादों (प्लेट -1) की तस्वीर के साथ एक सूची दी गई थी और उत्पाद जानने के लिए उनकी रुचि पूछी गई। उत्तरदाताओं की वरीयता के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण में 5 सबसे पसंदीदा उत्पाद वितरित किए गए और बाद में कौशल मूल्यांकन के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण की पेचीदगियां रखीं।

तालिका 1: उत्तरदाताओं की सामान्य प्रोफ़ाइल N-30

क्रम. संख्या	पहलू	श्रेणी	f	%
1	उम्र	20-25	11	37
		26-30	13	43
		31-35	6	20
2	शिक्षा	1^{st} - 5^{th}	5	17
		6^{th} - 8^{th}	12	40
		9^{th} - 12^{th}	9	30
		स्नातक	4	13
3	परिवार का प्रकार	सयुंक्त	16	53
		नुक्लेअर	14	47
4	मासिक आय	5,0000-10,0000	16	53.33
		11,0000-15,0000	8	26.67
		16,0000- 20,0000	6	20
5	मास मीडिया एक्सपोजर	रेडियो	13	43
		टीवी	17	57
6	सामाजिक आर्थिक स्थिति	कम	15	50
		सामान्य	15	50
		ऊंचा	0	0
7	जूट उत्पाद सीखने में रुचि	हाँ	30	100
		नहीं	0	0

2. प्रशिक्षण की प्रभावशीलता

कौशल की प्रभावशीलता जानने के लिए प्रशिक्षण करने के लिए तीन सूत्री रेटिंग पैमाना विकसित किया गया था | रेटेड पैरामीटर थे - भौतिक व्यवस्था , प्राप्त किया तकनीकी साहित्य , प्रयुक्त श्रव्य - दृश्य सहायता , प्रशिक्षण की विधि और प्रशिक्षों का व्यवहार | प्रत्येक पैरामीटर को बहुत अच्छा (3)। अच्छा (2), और निष्पक्ष

(1) के संदर्भ में रेट किया गया था। प्राप्त अंकों का योग प्रत्येक पैरामीटर तालिका -3 में दिखाया गया है।

तालिका में डेटा स्पष्ट रूप से प्रकट करता है कि विशाल बहुमत में उत्तरदाता भौतिक व्यवस्था से बैठने की अच्छी व्यवस्था के कारण, पर्याप्त दिन प्रकाश व्यवस्था , अच्छी तरह से वेंटिलेशन और सामग्री का अच्छा प्रदर्शन से अत्यधिक संतुष्ट थे। उत्तरदाताओं को भी तकनीकी साहित्य की उपलब्धता से अत्यधिक संतुष्ट कराया गया , कारण सरल हो सकते हैं जैसे हिंदी भाषा अच्छा कदम दर कदम फोटो ग्राफ, प्रभावी प्रस्तुति और विषय वस्तु में स्पष्टता। प्रशिक्षण और प्रशिक्षक व्यवहार को बहुत अच्छा रेट किया गया , कह सकते है कि कुल प्रशिक्षण को सर्वोत्तम रेट किया गया |

तालिका 2: प्रशिक्षण की प्रभावशीलता N-30

क्रम संख्या	पहलू	कुल अंक	प्राप्त अंक	%
1	शारीरिक व्यवस्था	350	340	97.22
2	तकनीकी साहित्य	540	511	94.62
3	ए - वी एड्स	360	351	97.5
4	प्रशिक्षण की विधि	180	156	91.11
5	प्रशिक्षक व्यवहार	90	81	96.66
6	कुल अंक	1530	1477	96.5

तालिका 3: प्रशिक्षण और संचार के स्तर से लाभ ट्रेनर N - 30

क्रम संख्या	पहलू	श्रेणी	f	%
1	प्रशिक्षण से लाभ	हाँ	30	100
		नहीं	-	-
2	प्रशिक्षक का संचार स्तर	समझने योग्य	30	100
		न समझने योग्य	-	-

3. ग्रामीण महिलाओं में विकसित कौशल का आकलन

प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में शोधकर्ता ने कौशल मूल्यांकन परीक्षा ली और सभी प्रतिवादी ने लेख लिखे और अंक इए गए । प्रत्येक दाहिने चरण के लिए एक अंक और प्रत्येक गलत कदम के लिए शून्य अंक से सम्मानित किया गया। प्राप्त अंकों के आधार पर, उत्तरदाताओं को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया था अर्थात उत्कृष्ट कौशल विकसित (80-100%), अच्छा कौशल विकसित (60- 79.9%) निष्पक्ष कौशल विकसित (40-59.9%), और कम कौशल विकसित (40% से कम)।

उत्तरदाताओं के बीच कौशल के विकास का मूल्यांकन सभी अंकों को जोड़ना सभी चरणों के प्रत्येक मूल्य वर्धित जूट उत्पाद बनाने में शामिल किया गया था | कुल चरण - पांच मूल्य वर्धित उत्पाद इकतालीस थे। कुल मिलाकर उत्तरदाताओं (30) की संख्या को गुणा करके अंक की गणना की गई | इस प्रकार अधिकतम प्राप्य अंक 1230 था और प्रतिवादी अंक 1165 था , समग्र कौशल विकसित 94.71 प्रतिशत था|

तालिका 4: उत्तरदाताओं के बीच विकसित कौशल N-30

क्रम संख्या	उत्पाद	कुल उत्पादों के लिए कुल अंक	सभी प्रतिवादी द्वारा प्राप्त अंक	कौशल विकास का प्रतिशत
1	बेल्ट	210	202	96.19
2	फ़ोन मेट	210	204	97.14
3	फ़ोन फ्रेम	240	219	91.25
4	बुक होल्डर	360	340	94.44
5	जूट चित्रण	210	208	99.04
	कुल कौशल विकास	1230	1165	94.71

तालिका 4 के अनुसार पता चलता है कि प्रशिक्षण का प्रभाव और कौशल विकसित संबंधित 100 प्रतिशत महिलाएं उत्कृष्ट की श्रेणी के अंतर्गत आती हैं | कारण - नारी शिक्षा की पकड़ने की क्षमता अच्छी थी ; वे अत्यधिक कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित और उत्सुक थी ताकि वे अपनी बेहतरी के लिए अपने जीवन में इस प्रशिक्षण कौशल का और अधिक उपयोग कर सकते हैं|

तालिका 5: स्वरोजगार के लिए जूट को एक सूक्ष्म उद्यम के रूप में लेना (N= 30)

क्रम संख्या	एक सूक्ष्म उद्यम के रूप में लेना	f	प्रतिशत
1	हाँ	23	76.67
2	नहीं	7	23.33

तालिका 5 दर्शाती है कि तीन चौथाई से अधिक ग्रामीण महिलाएं उत्तरदाता (76.67%) मूल्य बनाने के लिए उत्सुक थे |जूट उत्पाद को अपने घर में सूक्ष्म उद्यम के रूप में परिवार स्तर, दोस्तों और गैर सरकारी संगठनों या सरकारी एजेंसियों की मदद की मदद से जोड़ा, जबकि केवल 23.33 प्रतिशत उत्तरदाता नहीं लेना चाहते थे। कारण यह था कि वे एक उद्यम को संयुक्त रूप से स्वतंत्र चलाना भी मुश्किल मानते है | इस प्रशिक्षण के बाद शोधकर्ता ने उत्तरदाताओं के लिए एक अतिरिक्त प्रयास किया, उन्हें एक गैर सरकारी संगठन से परिचित कराकर जो इस तरह की गतिविधि के साथ काम कर रहा है। इस समूह के परिणाम के रूप में दिल्ली एनसीआर स्थित रेडीमेड गारमेंट हाउस से जूट मोबाइल कवर (100 पीस) बनाने का आदेश मिला और एनजीओ से मिली जानकारी के अनुसार महिलाओं ने मोबाइल कवर तैयार किया और उसी को दिल्ली पहुंचाया गया। यह शोधकर्ता द्वारा किया गया कुछ प्रयास है, यदि केवीके और गैर सरकारी संगठनों में काम कर रहे हैं। आगे आएं और प्रशिक्षित महिलाओं से बातचीत करे और उत्पादों के विपणन में मदद करता है ताकि महिलाएं सशक्त बन सके |

निष्कर्ष

यह निष्कर्ष निकाला गया है कि विकसित हस्तक्षेप मूल्य वर्धित जूट उत्पादों पर उपयोगिता और सजावटी उद्देश्य के लिए हस्तशिल्प उत्पाद पैकेज बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। सब उत्तरदाताओं ने प्रशिक्षण को अपने जीवन के लिए लाभकारी माना और अवसर मिलने पर वे अपना उद्यम शुरू कर सकते हैं। मैक्रैम तकनीक के संयोजन के साथ जूट की रस्सी का उपयोग करने का विचार करना , प्रतिवादी द्वारा चिपकाने और झूलने की सराहना की गई। यह जूट की नई नवोन्मेषी वस्तुएँ बनाने के लिए एक रास्ता है जो उपयोग किया जाए तो यह हस्तशिल्प जूट के क्षेत्र में अन्य रचनात्मक तकनीक के साथ एक उज्ज्वल भविष्य साबित होगा | साथ ही अन्य फाइबर जैसे रस्सी के साथ केला, नारियल के रेशे का उपयोग विभिन्न मूल्य वर्धित आइटम के उत्पादन में उनकी भविष्य की आजीविका सुरक्षा के लिए किया जा सकता है | यह सिफारिश है कि उद्यम से संबंधित विशेष कौशल उन्मुख प्रशिक्षण डीआरडीए, डीआईसी, सरकार द्वारा आयोजित किया जाना चाहिए और गैर सरकारी संगठन और सहकारिता विशेष रूप से विशेष पहलुओं पर ताकि महिलाएं विशेष उद्यम में सक्षम बन सकें|

सन्दर्भ

1. अरोड़ा के. शहरी महिलाओं का सूचना सशक्तिकरण गारमेंट केयर लेबल के संबंध में उपभोक्ता। एक अप्रकाशित एमएससी थीसिस, गृह विज्ञान का महाविद्यालय,हरयाणा , 2007।

2. नेगी टी. चयनित उद्यमी का स्वोट विश्लेषण ग्रामीण महिलाओं द्वारा निष्पादित सक्रिय। एक अप्रकाशित एमएससी थीसिस, गृह विज्ञान का महाविद्यालय, हरयाना , 2010।

3. यादव एस. कोटा डोरिया साड़ियों का मूल्य संवर्धन ब्लॉक प्रिंटिंग और मैचिंग एम्ब्रॉयडरी एक अप्रकाशित एमएससी थीसिस, गृह विज्ञान का महाविद्यालय, हरयाणा , 2010.

4. यादव, आर. स्वर्णजयंती ग्राम स्वरोजगार की भूमिका के बीच उद्यमिता गतिविधियों को बढ़ावा देने में ग्रामीण महिलाएं योजना । एक अप्रकाशित एम.एससी. थीसिस, हरयाणा , 2009|

Corresponding Author

कुमारी भारती*

पीएच. डी शोधकर्ता, सनराईस विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)